ISSN - 2348-2397
UGC Approved, Journal No. 48836
SHODH SARITA
SHODH SARITA
Vol. 4, Issue 15, July-September, 2018
Page Nos. 6-9
AN INTERNATIONAL BILINGUAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

भारतीय भाषाओं में चित्रित रामकथा

डॉ0 संध्या वात्स्यायन*

शोध सारांश

रामकथा कहने वालों में तुलसीदास सर्वाधिक लोकप्रिय रहे। उन्होंने लिखा था। "जरि जाउ सो जीवन जानकीनाथ। जियइ जग में तुम्हरो बिनु है।" अर्थात् राम ही मानस कथा और तुलसी के जीवन के आधार हैं। इस पर किसी भी प्रकार का कोई समझौता नहीं। उनकी कविता रूपी स्त्री 'राम नाम' रूपी वस्त्र से शोभा पाती है। "भनिति विचित्र सुकवि कृत जोऊ। राम नाम बिन सोह न सोऊ।। बिधुबदनी सब भाँति सँवारी। सोह न बसन बिना नर–नारी।।" अर्थात् तुलसी की कविता बिना 'राम नाम' के परम पद नहीं पाती। काव्य एवं राम का यह संबंध तुलसी से नहीं, अपितु तुलसी से काफी पहले भी रहा है। संस्कृत हो, प्राकृत हो, क्षेत्रीय भाषा हो, राम और तत्कालीन भाषा–काव्य का संबंध अक्षुण्ण रहा है। वाल्मीकि के 'राम' मनुष्य हैं, पर असाधारण मनुष्य हैं। भवभूति के राम भी वाल्मीकि के से राम हैं। वाल्मीकि–भवभूति के असाधारण राम तुलसी के यहाँ आकर 'ब्रह्म' हो जाते हैं।

'राम कथा' को आधार बनाकर लगभग तीन सौ से लेकर एक हजार तक संख्या में 'रामायण' लिखी गयीं। प्राचीन रामायण 'वाल्मीकि रामायण' है। इसे 'आर्ष रामायण' भी कहा जाता है। साहित्य के क्षेत्र में 'वाल्मीकि रामायण' को ही आधार–ग्रंथ के रूप में स्वीकार किया जाता है। रामकथा का एक रूप मुनि व्यास द्वारा रचित महाभारत में 'रामोपाख्यान' के रूप में आरण्यक पर्व (वन पर्व) में भी मिलता है। रामकथा के कुछ संदर्भ 'द्रोण पर्व' एवं 'शांति पर्व' में भी मिलते हैं। बौद्ध परंपरा में राम से जुड़ी जातक–कथाएँ मिलती हैं। जैसे– दशरथ जातक, अनामक जातक तथा दशरथ कथानक। इसके अलावा जैन साहित्य में विमलसूरि कृत प्राकृत की 'पउमचरियं', आचार्य रविशेण कृत संस्कृत भाषा की 'पद्मपुराण', अपभ्रंश की स्वयंभू कृत 'पउमचरिउ', 'रामचंद्र चरित्र पुराण' तथा संस्कृत में गुणभद्र कृत 'उत्तर पुराण' प्रमुख हैं। जैन परंपरा में राम को 'पद्म' नाम से पुकारा जाता है।

भारत में अनेक भाषाओं में रामकथा लिखी गयी। हिंदी में लगभग 11, तेलुगु में 12, तमिल में 12, बांग्ला में सबसे अधिक लगभग 26, मराठी में 8, उड़िया में 6 रामायणें लिखी हुई मिलती हैं। इसके अतिरिक्त गुजराती, पंजाबी, असमिया, मलयालम, कन्नड़, उर्दू, अरबी, फारसी जैसी अन्य भारतीय भाषाओं में भी रामकथा लिखी गयी। रामकथा लिखने वाले प्रमुख कवियों में वाल्मीकि, भवभूति, कृत्तिवास, तुलसीदास के अतिरिक्त महाकवि कालिदास, भास, भट्ट, प्रवरसेन, क्षेमेंद्र, राजशेखर, कुमारदास, विश्वनाथ, सोमदेव, गुणादत्त, नारद, लोमेश, केशवदास, मैथिलीशरण गुप्त, समर्थ रामदास, संत तुकडोजी,गुरु गोविंद सिंह आदि प्रमुख कवि रहे। कई राम कथाएँ प्रचलित रहीं, जिनमें प्रमुख हैं– 'आर्ष रामायण, अद्‌भुत रामायण, सर्वार्थ रामायण, तत्वार्थ रामायण, प्रेम रामायण, संजीवनी रामायण, उत्तर रामचरितम, रघुवंशम्, प्रतिमानाटकम, कम्ब रामायण, भुशुण्डि रामायण, अध्यात्म रामायण, राधेश्याम रामायण, श्री राघवेंद्र चरितम, मंत्र रामायण, योग वशिष्ठ रामायण, हनुमन्नाटकम, आनंद रामायण, अभिषेकनाटकम, जानकी हरणम्' आदि। इसके अतिरिक्त भारत की विभिन्न भाषाओं में रचित रामकथाएँ भी मिलती हैं। जिनका उल्लेख इस शोध–पत्र में किया जाएगा।

डॉ0 रमानाथ त्रिपाठी ने अपने प्रसिद्ध शोध–लेख में भारत में रामकथा को निम्नलिखित क्षेत्रों में विभाजित किया–

1. पूर्वांचल 2. मध्यप्रदेश 3. पश्चिम 4. दक्षिण

पूर्वांचल के अंतर्गत वे नेपाली, असमिया, बांग्ला और उड़िया रामायणों को रखते हैं। मध्यप्रदेश के अंतर्गत वे रामचरितमानस और मराठी, गुजराती रामायणों को रखते हैं। पश्चिम में पंजाबी रामायण को महत्व देते हैं। और दक्षिण के अंतर्गत तेलुगु, कन्नड़, तमिल और मलयालम रामायणें। इस शोध आलेख में इन राम–कथाओं के अतिरिक्त कुछ अन्य लिखित राम–कथाओं को भी शामिल किया जाएगा। परंतु हम प्रारंभ करेंगे आदि कवि वाल्मीकि की रामायण से जो सभी साहित्यिक आधारों का स्त्रोत है।

*एसोसिएट प्रोफेसर – हिन्दी विभाग, अदिति महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय

Principal, Aditi Mahavidyalaya (University of Delhi), Bawana, Delhi-110 039.
NAAC Coordinator Aditi Mahavidyala Bawana, Delhi-110039
NAAC Cordinator Aditi Mahavidyala Bawana, Delhi-110039
Scanned by TapScanner

(2)

अनुक्रम

अनुवाद सिद्धांत-चिंतन का आधार : अनुवाद व्यवहार / (संपादकीय) — 7

अनुवाद राष्ट्रीय एकता का वाहक है (अनुवाद संबंधी विचार) / डॉ. के. श्रीनिवास राव — 9

हिंदी और अंग्रेजी / डॉ. गार्गी गुप्त — 10

बदलती दुनिया और अनुवाद / डॉ. संध्या वात्स्यायन — 16

सृजनात्मक रूपांतरण और अंतर्राष्ट्रीय चेतना / डॉ. ममता खांडल — 21

अननुवाद्यता एवं रचनात्मकता / कोमल — 25

कार्यालयी अनुवाद : आवश्यकता और अपेक्षाएँ / प्रो. पूरनचंद टंडन — 31

प्रशासनिक अनुवाद : स्वरूप और चुनौतियाँ / डॉ. श्रीनारायण समीर — 39

मीडिया और अनुवाद / डॉ. साधना शर्मा — 47

डबिंग (पश्च ध्वन्यंकरण) की प्रक्रिया और अनुवाद / प्रो. कृष्ण कुमार गोस्वामी — 52

Social and Cultural Issues in Translation / Dr. Jagdish Sharma — 61

अनुवाद और अनुवादक / एस.के. नागेंद्र गुप्त — 72

अनुवादक और अनुवाद-चिंतक : भीष्म साहनी (अनुवादक परिचय) / डॉ. सूरज कुमार — 76

Song (अंग्रेजी कविता), गीत (अनुवाद) / विलियम ब्लैक (अनु. पुष्कर राव जोशी) — 85

Colors of Festival (अंग्रेजी कविता), उत्सव के रंग (अनुवाद) / परमेंद्र सिंह (अनु. बी.एस. त्यागी) — 86

नारी एक दर्पण है (मराठी कविता) / साइमन मार्टिन (अनु. प्रो. गजानन चव्हाण) — 87

पिता-पुत्र (उड़िया कहानी) / डॉ. प्रदीप्त कुमार मिश्र (अनु. डॉ. वेदुला रामालक्ष्मी) — 88

साँड (मलयालम कहानी) / डॉ. सुमित पी.वी. (अनु. डॉ. संगीता के.) — 92

भारतीय अनुवाद परिषद की गतिविधियाँ

दीक्षांत समारोह 2016-2017 (रिपोर्ट) / मैत्री — 96

अनुवाद कार्यशाला 2017-2018 (रिपोर्ट) / राकेश कुमार श्रीवास्तव — 99

वाद-विवाद प्रतियोगिता 2017-2018 (रिपोर्ट) / मैत्री — 102

31वाँ-33वाँ राष्ट्रीय पुरस्कार-सम्मान अर्पण समारोह (रिपोर्ट) / डॉ. हरीश कुमार सेठी — 104

Principal, Aditi Mahavidyalaya (University of Delhi) Bawana, Delhi-110 039

I.Q.A.C. Cordinator Aditi Mahavidyala Bawana, Delhi-110039

NAAC Cordinator Aditi Mahavidyala Bawana, Delhi-110039

Scanned by CamScanner

Scanned by TapScanner

(2)

डॉ. संध्या वात्स्यायन

बदलती दुनिया और अनुवाद

[illegible] यह बात तभी से मानी जा सकती है जब से विभिन्न कबीलाई वर्ग परस्पर [illegible] में आए और एक-दूसरे को जानने-समझने के लिए तत्पर दिखाई दिए। उनमें न केवल [illegible] का विकास होने लगा बल्कि भाषिक आदान-प्रदान भी प्रारंभ हुआ। मनुष्य [illegible] से ही जिज्ञासु रहा है। वह संस्कृति, कला, तकनीक, ज्ञान, आदि को जानने का इच्छुक रहा है। सुदूर देशों से व्यापार के सिलसिले में उसका आना-जाना लगा रहता था। ऐसे में उन्हें व्यापार और वाणिज्य के लिए या फिर अपने धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए दुभाषिए (Interpreter) की मध्यस्थता हमेशा महसूस की गई। इस तरह दुभाषिए की भूमिका महत्वपूर्ण होती चली गई। हालाँकि उन दुभाषियों के नाम आज कोई नहीं जानता है। राजनीतिक-सांस्कृतिक जीवन में अनुवाद की उपयोगिता को नकारा नहीं जा सकता। शांति-वार्ता हो, कोई संधि-समझौता हो, बिना मध्यस्थता के यह सब संभव ही नहीं है। राजनीतिक-कूटनीतिक पाठ अथवा राजनयिक पाठ (Diplomatic Text) की थोड़ी-सी भी गलत व्याख्या भयंकर परिणाम खड़े कर सकती है।

पश्चिम में अनुवाद-सिद्धांत संबंधी साहित्य काफी मात्रा में मौजूद है। 'जॉर्ज स्टीनर ने इसे चार कालों में बाँटा – पहला सिद्धांत तात्कालिक अनुभवजन्य केंद्रिकता का, दूसरा व्याख्यापरक अर्थात् इस बात की जाँच-पड़ताल करना कि मौखिक अथवा लिखित कथ्य को 'समझने' से क्या तात्पर्य है। तीसरा सिद्धांत मशीनी अनुवाद का आया, जिसके अंतर्गत व्यावसायिक अनुवादक आए और चौथे सिद्धांत के अंतर्गत अनुवाद व्यवहार का अध्ययन सुस्थापित तथा नव विकासमान विधाओं के बीच संपर्क बिंदु बन गया।'[1]

भारत में अनुवाद की परंपरा वैसी नहीं मिलती जैसी यूरोप में मिलती है, जबकि इस देश का साहित्य, ज्योतिष, गणित, दर्शन, विश्व के दूसरे देशों से कहीं आगे थे। भारत यूनान-अरब जैसे देशों की संस्कृतियों से तो प्रभावित हुआ परंतु अनुवाद की परंपरा को विकसित नहीं कर पाया जबकि भारतीय ज्ञान-विज्ञान विश्व की अन्य भाषाओं में रूपांतरित अथवा अनूदित होता रहा। "संस्कृत और पालि साहित्य दुनिया की अनेक भाषाओं में अनूदित होकर पहुँचा, परंतु संस्कृत की किसी रचना -- विशेषकर साहित्यिक रचना का पालि में अनुवाद नहीं हुआ... प्राकृत-अपभ्रंश अथवा लोक भाषाओं में यह प्रवृत्ति दिखाई देती है। रामायण, महाभारत, शाकुंतलम् आदि की परंपरा का प्रभाव अपभ्रंश रचनाओं में मौजूद है...।"[2]

Scanned by TapScanner

200

ISSN - 2348-2397
UGC Approved, Journal No. 48836

SHODH SARITA
Vol. 4, Issue 16, October-December, 2018
Page Nos. 1-4

AN INTERNATIONAL BILINGUAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

हिंदी सिनेमा में गाँव समाज और संस्कृति

❑ डॉ० संध्या वात्स्यायन*

शोध सारांश

सिनेमा तकनीकी की उपज है। मनोरंजन, संदेश एवं तकनीकी उसकी विशेषता है। पारंपरिक छवियों को लेकर वह आगे बढ़ा। समाज एवं मानव मन की कई अभिव्यक्तियां इससे गुजरीं। भारत में इसकी शुरुआत धार्मिक कथा–चरित्रों को लेकर हुई। ग्रामीण समाज में रची–बसी कई कहानियाँ इस रुपहले परदे पर उतरकर हमारे मन में समा गईं। ग्रामीण समाज पर बनी फिल्मों की एक लंबी परंपरा है। 1950 से 1980 तक बनी भारतीय सिनेमा जैसे– 'मदर इंडिया', 'गंगा जमुना', 'तीसरी कसम', 'मेरा गाँव मेरा देश', 'गोदान', 'उपकार' आदि में गाँव एवं गाँव जन दोनों पर्दे पर उतर आए। भारतीय ग्रामीण संस्कृति एवं भाषा सिनेमा में मानो जीवित हो उठे। ग्रामीण जीवन में हो रहे परिवर्तन को भी हिंदी सिनेमा पूरी शिद्दत से दिखाता है। 'दो बीघा ज़मीन'(1953), 'नया दौर'(1957), 'मदर इंडिया'(1957), 'गोदान' (1963), 'तीसरी कसम' (1966), 'उपकार'(1967) से लेकर 'लगान'(2001) तक हिंदी सिनेमा अपने बदलाव के साथ ग्रामीण समाज में आ रहे परिवर्तन को दिखाता है। इसके अतिरिक्त 'पीपली लाइव', 'दंगल' तथा 'पंचलैट' (फणीश्वरनाथ 'रेणु'की कहानी पर आधारित) फिल्मों में गाँव, उसकी संस्कृति के दर्शन होते हैं। प्रस्तुत आलेख में इन्हीं बिंदुओं पर विस्तार से विचार किया गया है।

संस्कृति समाज की आधार भूमि कहलाती है। जिसकी पहचान समाज विशेष के आचार–व्यवहार, खान–पान, कला तथा मान्यताओं के द्वारा की जा सकती है। संस्कृति का संबंध संस्कारों से है। संत विचारक, लोक नायक, लोक नृत्यकार, लोक नाटकारों की गतिविधियाँ ही संस्कार कहलाती हैं। संस्कार से संस्कृति जन्म लेती है। "संस्कार रूपी बीज से संस्कृति का कर्म रूपी वट वृक्ष उत्पन्न होता है।" संस्कृति अंग्रेजी शब्द 'कल्चर' का पर्याय है जिसका प्रयोग संकीर्ण एवं व्यापक दोनों अर्थों में किया जाता है। श्री टायलर(Tylor) के अनुसार, "संस्कृति वह जटिल समग्रता है, जिसमें ज्ञान, विश्वास, कला, आचार, कानून, प्रथा तथा ऐसी ही अन्य क्षमताओं और आदतों का समावेश रहता है जिन्हें मनुष्य समाज का सदस्य होने के नाते प्राप्त करता है।" 'संस्कृति' शब्द संस्कृत भाषा का है जो कि 'सम्' (उत्तम) उपसर्गपूर्वक 'कृञ' धातु से 'क्तिन्' प्रत्यय होने पर बना है। इसका सरल अर्थ है 'उत्तम कृति' अर्थात् देह, इन्द्रिय, प्राण, मन, बुद्धि आदि की उत्तम (सम्यक) चेष्टाएँ या हलचलें।

विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक भारतीय संस्कृति मानी जाती है। इसकी एक महत्त्वपूर्ण विशेषता यह है कि हजारों वर्षों के बाद भी यह संस्कृति आज भी अपने मूल स्वरूप में जीवित है जिसका आधार इसके शाश्वत जीवन मूल्य हैं जो इसे आज भी अमर्त्य बनाए हुए हैं। भारतीय चिंतन में संस्कृति वे आध्यात्मिक मान्यताएँ हैं जिनमें नदियों, पर्वतों एवं प्राकृतिक उपादानों में भी आस्था के दर्शन होते हैं।

संतों, विचारकों, विद्वानों, दार्शनिकों एवं ऋषि–मुनियों द्वारा इस धरती पर समय–समय पर समाज की जड़ता को समाप्त करने की पुरज़ोर कोशिश की जाती रही है। समाज के प्रत्येक व्यक्ति को धर्म संबंधी स्वतंत्रता प्राप्त रही। यही इस संस्कृति की विशेषता है कि निश्छलता, भोलापन, सहृदयता, बंधुत्व, राष्ट्रीयता की भावना इस राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक में कूट–कूट कर भरी हुई है।

शाश्वत मूल्यों की यही ग्राह्यता विश्व की प्राचीनतम संस्कृति को लोकतंत्र एवं स्थायित्व के गुणों के साथ–साथ सहिष्णुता एवं समन्वयता के गुणों से भी ओत–प्रोत करती है। इस प्रकार भारतीय संस्कृति की अवधारणा 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के गुणों पर खरी उतरती है।

शस्य–श्यामल संस्कृति के विविध रूप भारतीय संस्कृति में परिलक्षित होते हैं जिनमें आंचलिक, ग्रामीण, आधुनिक, अत्याधुनिक अथवा शहरी संस्कृति अपने विविध आयामों के साथ इसे और भी समृद्ध किए हुए है।

साहित्यकारों के अनुसार सौंदर्य के देवता तो केवल गाँवों में बसते हैं। यह सर्वविदित है कि भारत एक कृषि प्रधान राष्ट्र है जिसका एक बहुत बड़ा भाग आज भी गाँवों में निवास करता है जो

*एसोसिएट प्रोफेसर – अदिति महाविद्यालय दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली

I.Q.A.C. Cordinator Aditi Mahavidyala Bawana, Delhi-110039

Scanned by TapScanner

डॉ. संध्या वात्स्यायन

हिंदी का बाजार और अनुवाद

हिंदी और अनुवाद का संबंध पुराना है परंतु भारत में अनुवादक को वास्तविक महत्व एवं गरिमा हिंदी के राजभाषा घोषित होने के बाद मिली। अनुवादकों के पद बने तथा हिंदी साहित्यिक होने के साथ प्रशासनिक भी हुई। इस आधार पर अनुवाद का स्वरूप बदल जाता है। साहित्यिक एवं प्रशासनिक अनुवाद में स्पष्ट अंतर है। हिंदी के प्रमुख विद्वानों ने इस ढंग के अनुवाद को कुछ विशिष्ट प्रकार से परिभाषित किया। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार 'अनुवाद' शब्द के लिए शब्द नहीं पर ठीक-ठीक उल्था होना चाहिए, स्रोत भाषा के प्रभाव से लक्ष्य भाषा को बचाना चाहिए।[1] डॉ. हरिवंशराय बच्चन 'साहित्यिक अनुवादों में भाव-विचार और भाषा को अलग करके नहीं देखा जाना चाहिए।'[2] अज्ञेय ने 'अनुवाद कला और समस्याएँ' पुस्तक में समस्त अभिव्यक्ति को ही अनुवाद कहा है।[3]

हिंदी अब रोजी-रोटी की भाषा बन चुकी है। वह ग्लोबल भाषा है। हिंदी के बाजार में अनुवाद की भूमिका को समग्रता से समेटने वाले जिन बिंदुओं में विभाजित करके देखा जा सकता है, वे हैं :

1. प्रशासनिक हिंदी और अनुवाद
2. साहित्यिक अनुवाद (कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक आदि)
3. बैंकिंग एवं विधि की हिंदी और अनुवाद
4. जनसंचार माध्यम, हिंदी और अनुवाद
5. डबिंग शैली और अनुवाद (सिनेमा, डॉक्यूमेंट्री, विज्ञापन एवं शिक्षाप्रद कार्यक्रमों के संदर्भ में)

1) प्रशासनिक हिंदी और अनुवाद

प्रशासनिक हिंदी साहित्यिक हिंदी से अलग होती है। यह मुख्यतः कामकाज की भाषा है। इस भाषा में 'कार्यालयीन संस्कार' होता है। इसमें तकनीकी शब्दों का प्रयोग अधिक होता है। प्रशासनिक हिंदी में अनुवाद के दौरान अंग्रेजी के तकनीकी शब्दों का उल्था करना होता है जिसके कारण हमारी हिंदी असहज दिखती रही है। परंतु अब वह अंग्रेजी के तकनीकी शब्दों का सहजता से अनुवाद कर रही है। अंग्रेजी में तैयार पत्र-व्यवहार, लेखन, फॉर्म, दस्तावेज़ों आदि का हिंदी में अनुवाद किया जाता है। प्रशासनिक क्षेत्र में आज भी कार्यालयी दस्तावेज प्रायः

I.Q.A.C.
Cordinator
Aditi Mahavidyala
Bawana, Delhi-110039

Principal,
Aditi Mahavidyalaya
(University of Delhi)
Bawana, Delhi-110 039.

NAAC
Cordinator
Aditi Mahavidyala
Bawana, Delhi-110039

Scanned by TapScanner